ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

भक्त रविदास की वाणी में दलित चेतना का स्वरुप

नाम -डॉ०आनन्द कुमार यादव **जन्म**- 07 जून1979

पिता - श्री लच्छ्मी प्रसाद **शिक्षा**- एम.एससी., बी.एड.,एम.ए.,पीएच.डी.(NET)

संप्रति - सहायक समन्वक(अध्यापक) BRC कमासिन, बांदा (उ०प्र०) 210125

भक्त रविदास जी भक्ति आंदोलन के महान चिंतकों में से एक थे और उनकी वाणी सिक्खों के पवित्र ग्रन्थ 'श्री गुरु ग्रन्थ' में दर्ज है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अंदर उनके कुल 40 शबद, 16 रागों में दर्ज हैं। ये राग हैं– श्री राग, गउड़ी, आसा, गूजरी, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, सूही, बिलावल, गोंड, रामकली, मारू, केदारा, भैरउ, बसंत और मलार। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अतिरिक्त और भी बहतु सी वाणी भक्त रविदास के नाम से मिलती है लेकिन उसकी प्रमाणिकता संदिग्ध है। अतः प्रस्ततु शोध–पत्र श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में उपलब्ध रविदास वाणी को आधार बनाकर लिखा गया है।

भक्त रविदास जी ने अपनी वाणी द्वारा भारतीय समाज के कथित निम्न वर्ग जिसे दलित वर्ग या शूद्र वर्ण भी कहा जाता है, के लोगों के अंदर चेतना जगाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने न केवल दलित चेतना को ही जगाया बल्कि मानव समाज में एकता, समानता एवं सद्भावना स्थापित करने और समाज को हर प्रकार से सुखी बनाने का भी अथक प्रयास किया है। भक्त रामानंद, भक्त कबीर, भक्त नामदेव और भक्त त्रिलोचन आदि की तरह भक्त रविदास ने भी अपनी अमृतवाणी के प्रवाह से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर भगाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिस प्रकार भक्त कबीर जी ने कहा है–

कबीर सब ते हम बुरे हम तजि भलो सब कोइ।। जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ।।1

ठीक उसी प्रकार भक्त रविदास जी ने भी कहा है कि जो मेरी अवस्था वाला है वही मेरा मित्र है। उनकी अवस्था ऐसी उच्च है जहां न कोई गम है, न दुःख है, न संदेह है, न भय है और न ही किसी प्रकार का कोई विकार है। उस अवस्था में किसी प्रकार का कोई कर भी नहीं लगता और न ही समाज का दूसरे व तीसरे वर्ग में विभाजन है, हर तरफ एक परमात्मा ही नजर आता है। भक्त रविदास जी का प्रयास मानव समाज को उसी उच्च अवस्था में पहंचुाने का है–

बेगम पुरा सहर को नाउ।।दूखु अंदोह नही तिहि ठाउ।।

नां तसवीस खिराजु न मालु।। खउफु न खता न तरसु जवालु।।

काइमु दाइमुस दा पातिसाही।। दोम न सेम एक सो आही।।

कहि रविदास खलास चमारा।। जो हम सहरी सु मीतु हमारा।।2

दलित चेतना का अर्थ है– समाज के कथित उच्च वर्ग द्वारा प्रताड़ित निम्न वर्ग अथार्त शूद्रों का अपने अस्तित्व के प्रति जागृत होना। भक्त रविदास जी भारतीय समाज में व्याप्त असमानता और दलितों की दयनीय स्थिति से दुःखी थे, इसलिए वे मानव समाज को उच्च वर्ग की बंदर–बांट से मुक्ति दिलाना चाहते थे। वे जानते थे कि जब तक दलित अपने अस्तित्व के प्रति जागृत नहीं होंगे तब तक उनका उच्च वर्ग की सम्प्रभुता से मक्त होना संभव नहीं हो सकता है। अतः उन्होंने समाज के निम्न वर्ग को जागृत करने का कार्य आरम्भ किया और इसमें वे सफल भी हुए। यहां एक बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि यदि समाज का केवल पीड़ित वर्ग ही जागृत होता है और अपने अधिकारों को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है तो समाज में अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है क्योंकि समाज का उच्च वर्ग (जो दूसरों का अधिकार छीन कर बैठा है) अज्ञानता के वशीभूत होकर उनका विरोध करेगा। अतः उन्होंने समाज के सभी वर्गों को समान उपदेश देकर जागृत करने का प्रयत्न किया है–

किआ तू सोइआ जागु इआना तै जीवनु जगि सचु करि जाना।।3

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 0
January 2017

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

भक्त रविदास जी ने जीविका के प्रति पूर्ण निष्ठा और इर्मानदारी रखने का उपदेश दिया है। उनके अनुसार समाज का छोटे से छोटा कर्म करके भी उदर–पूर्ति की जा सकती है, परन्तु कर्म को पूरी लगन के साथ किया जाना चाहिए। उन्होंने मानवीय एकता एवं सामाजिक समानता पर जोर देते हुए कहा है कि एक परमात्मा ही अनेक रूप होकर सभी घटों में समाया हुआ आनंदित हो रहा है– सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुगवै सोई।।4 भक्ति आंदोलन के समय भारतीय समाज में दलितों की स्थिति अत्यंत सोचनीय थी, जिसका वर्णन तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस में भी मिलता है– ढोल गवार सूद्र पसु नारी।। सकल ताड़ना के अधिकारी।।5

भक्त रविदास ने समाज में फैली इस भयंकर बीमारी को दूर करने का अनोखा ढंग अपनाया है। उन्होंने भक्त कबीर की तरह ''जौ तूं ब्राह्मण ब्राहमणी जाइआ।। तौ आन बाट काहे नहि आइआ।।''6 का विरोधी स्वर वाला नारा न देकर विनम्र भाव दशार्ते हुए दलितों की समस्या का समाधान करने के लिए मध्य का मार्ग निकाला है। इस मार्ग पर चलकर समाज की असमानता को भी दूर किया जा सकता है और सामाजिक उथल–पुथल से भी बचा जा सकता है। जिस प्रकार एक लकीर को बिना मिटाए छोटा करने का आसान तरीका है उसके पास उससे बड़ी लकीर खींच देना। उसी प्रकार भक्त रविदास जी ने दलितों को ऊपर उठाने की कोशिश की है। हालांकि भक्त जी जाति–पांति का खण्डन करते थे लेकिन अपनी वाणी में उन्होंने स्वयं को बार–बार चमार कहकर सम्बोधन किया है और अपनी जाति, कुल व जन्म को ओछा अथार्त निम्न कहा है क्योंकि समाज उन्हें अछूत समझता था– नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं।।7 मेरी जाति कमीनी पाति कमीनी ओछा जनु हमारा।।8

इस प्रकार दलितों को उपदेश देकर भक्त रविदास ने यह समझाया है कि यदि समाज का उच्च वर्ग उन्हें (दलितों को) नीच कहता हुआ अनेक प्रकार से प्रताड़ित करता है तो उन्हें उच्च वर्ग को नीचा दिखाने की जरूरत नहीं बल्कि स्वयं को ऊंचा उठाने की आवश्यकता है। खुद को ऊंचा उठाने से उनको नीच कहने वाले अपने आप ही निम्न हो जाएंगे। इसकी पुष्टि में भक्त जी ने उदाहरण प्रस्ततु किया है कि जिस प्रकार ताड़ के वृक्ष को लोग अपवित्र मानते हैं और उससे बने कागज को भी अपवित्र मानते हैं। परंतु जब उसी कागज के ऊपर परमात्मा की स्तुति लिखी जाती है तो सभी उसके आगे नतमस्तक होते हैं और उसकी पूजा करते हैं। उसी प्रकार परमात्मा का नाम स्मरण करने पर नीच कहे जाने वाले शूद्र को भी सभी नमस्कार करते हैं–

तर तारि अपवित्र करि मानीऐ जैसे कागरा करत बीचारं।। भगति भागउत लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमस्कारं।।9

नामदेव, कबीर आदि महान भक्तों का उदाहरण देकर समाज के पीड़ित वर्ग को समझाते हुए भक्त रविदास ने कहा है देखो जिस नामदेव को उच्च कुल वाले अछूत मानते थे और छींबा कह कर पकुारते थे, वही भक्त नामदेव परमात्मा का गुाणगान करके संसार में प्रसिद्ध हो गया है। उसी प्रकार भक्त कबीर भी परमात्मा का भजन करके तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ है। फिर स्वयं को सम्बोधित करते हुए कहा है कि जिसके खानदान के नीच लोग अभी तक बनारस के आस–पास मरे हुए पशुओं को ढोते हैं। उस नीच कुल में जन्मे भक्त रविदास को, जो अब प्रभु के सेवकों का दास बन गया है, शास्त्रों की मयार्दा के अनुसार चलने वाले ब्राह्मण विधिपूर्वक दण्डवत (अष्टांग प्रणाम) करते हैं–

जा के कुटुंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजह बंनारसी आस पासा।। आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा।।10

कर्म की प्रधानता को महत्व देते हुए भक्त रविदास ने मानव समाज को यह संदेश दिया है कि जन्म से कोई ऊंचा या नीचा नहीं होता, अच्छे कर्म मनुष्य को ऊंचा बनाते हैं और बुरे कर्मों से वह नीच बन जाता है। कर्म सिद्धांत की पुष्टि के लिए भक्त रविदास कहते हैं यद्यपि गंगा जल पवित्र होता है और सभी लोग उसकी पवित्रता को मानते हैं लेकिन गंगा जल से बनी हुई शराब को संत जन ग्रहण नहीं करते क्योंकि शराब तो मादकता ही प्रदान करेगी। गंगा जल से बनी शराब और साधारण जल से बनी शराब में कोई अंतर नहीं होता है– सुरसरी सलल कृत बारुनी रे संत जन करत नहीं पानं।।11

भक्त रविदास द्वारा रचित बाणी का गहन अध्ययन करने से यह पूणर्तः स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि उनके साथ समाज के उच्च वर्ग ने अनेक प्रकार के बुरे बर्ताव किए पर उन्होंने कहीं भी किसी कटु वचन का प्रयोग नहीं किया है। उच्च वर्ग की निन्दा करने के बजाय वे स्वयं अपनी ही बुराइयों को समाज के सम्मुख प्रस्ततु करते हैं। उनके विचार से किसी की

निन्दा करने वाले के शुभ कर्म भी व्यर्थ हो जाते हैं– जे ओहु अठसठि तीरथ न्वै।। जे ओहु दुआदस सिला पुजावै।। जे ओहु कूप तटा देवावै।। करै निंद सभु बिरथा जावै।।12

साधुओं के महत्व तथा वर्ण एवं जाति–पांति की निरर्थकता को स्पष्ट करते हुए भक्त रविदास ने कहा है कि जिस कुल में साधु उत्पन्न हो जाए उस कुल की पवित्र सुगन्ध सारे संसार में फैल जाती है। फिर वर्ण–अवर्ण तथा धनी–निर्धन का कोई विचार नहीं रह जाता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, डोम, चण्डाल तथा मलेच्छ आदि कोई भी हो परमात्मा का भजन करने से सारे निर्मल हो जाते हैं। वे आप तो मुक्त होते ही हैं, उनकी पीढ़ियां (आगे व पीछे की) तक तर जाती हैं–

जिह कुल साधु बैसनौ होइ।।

बरन अबरन रंकु नहीं ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जग सोइ।।

ब्रहमन बैस सूद अरु खत्री डोम चंडाल मलेछ मन सोइ।। होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ।।13

अंत में कह सकते हैं कि भक्त रविदास ने अपनी बाणी द्वारा अनेक अकाट्य प्रमाणों व उदाहरणों को लोगों के सामने रख कर समस्त मानव समाज को जागृत करने का प्रयत्न किया है। उनकी बाणी में मानव मात्र के लिए सार्वनिष्ठ उपदेश निहित हैं, जो मनुष्य को भगवद्भक्ति की ओर प्रेरित करते हुए आपसी प्रेम, एकता, समानता और सौहार्द की तरफ ले जाता है।

सन्दर्भ

1. श्री गरु ग्रंथ साहिब, श्लोक कबीर, 7, पृष्ठ 1364.
2. वही, गउड़ी रविदास, 2, पृष्ठ 345.
3. वही, सूही रविदास, 2, पृष्ठ 794.
4. वही, सोरठि रविदास, 1, पृष्ठ 658.
5. तुलसीदास, श्री रामचरित मानस (सचित्र, सटीक, वृहदाकार), गीता प्रेस गोरखपुर, तिरपनवां संस्करण, 2001, सुन्दरकाण्ड, 59/चौपाई 3/3–4.
6. श्री गुरू ग्रंथ साहिब, गउड़ी कबीर, 7, पृष्ठ 324.
7. वही, मलार रविदास, 1, पृष्ठ 1293.
8. वही, सोरठि रविदास, 6, पृष्ठ 659.
9. वही, मलार रविदास, 1, पृष्ठ 1293.
10. वही, मलार रविदास, 2, पृष्ठ 1293.
11. वही, मलार रविदास, 1, पृष्ठ 1293.
12. वही, गोंड रविदास, 2, पृष्ठ 875.
13. वही, बिलावल ुरविदास, 2, पृष्ठ 858.